

## सितंबर माह मे किसानों के लिए सलाह

- पशुओं को वर्षा के पानी से बचायें।
- पशुओं को यथासंभव सूखे व ऊँचे स्थान पर रखें।
- वातावरण के तापमान में उतार-चढ़ाव के दुष्प्रभावों से पशुओं को बचाने के उपाय करें।
- पशुओं को दिन के समय धूप से बचाने तथा पीने के पानी को समुचित व्यवस्था करें और रात के समय ठंड से बचने के उपाय करें।
- वर्षा होने पर पशुशाला में जल भराव हो जाता है। अतः जल निकासी का समुचित प्रबंध करें।
- बाड़ें की साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें।
- रक्त परजीवी वर्षा काल में जन्म लेते हैं तथा मच्छर, कीट व चीचड़ इत्यादि के द्वारा फैलते हैं इससे विभिन्न रोग होते हैं। अतः बाड़ें के आस-पास गंदा पानी एवं गंदगी एकत्रित न होने दें।
- परजीवी नाशक दवा अवश्य पिलायें।
- गर्मी व नमी जनित रोगों से बचाने के लिए समय रहते इसके टीके पशुओं में अवश्य लगवायें।
- इस महीने में हरे चारे की उपलब्धता अधिक होती है इसलिए हरे चारे के साथ-साथ दाना व खनिज लवण मिश्रण अवश्य दें।
- हरे चारे के संग्रहण पर विशेष ध्यान दें।
- हरे चारे से साइलेज व हे इत्यादि बनायें।
- बरसीम, लूसर्न की बुआई की तैयारी करें।

## जुलाई माह मे किसानों के लिए सलाह

- हारा चारा की बुआई करना सुनिश्चित करें।
- वर्षा से बचाव के लिए समुचित व्यवस्था करें।
- पशुओं को बीमारियों से बचाव हेतु टीकाकरण कराये।
- दुधारू पशुओं के लिए हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा व रातब आदि की समुचित व्यवस्था रखें।
- नवजात बच्चों को खीस अवश्य पिलायें व नाभि रोग से बचाव करें।
- बाँझ पशुओं को समुचित चिकित्सा व गर्भित कराएँ।
- पशुपालन के प्रतिदिन की प्रक्रियाएँ मौसम विज्ञान की भविष्यवाणी को ध्यान मे रखते हुए अपनाएं।

## जून माह मे किसानों के लिए सलाह

- खरीफ मे हारा चारा की बुआई प्रारम्भ करें। ज्वार व मक्का आदि के उन्नत किस्मों के बीज का प्रयोग करें।
- गर्मियों के मौसम मे पैदा की गई ज्वार मे जहरीला पदार्थ हो सकता है, जो पशुओं के लिए हानिकारक है। अतः चारों की सिंचाई या चारों को धोकर खिलाएँ।
- पशुओं को गर्मी से बचाने के लिए उचित उपाय करें तथा अधिक से अधिक स्वच्छ पानी पिलायें व नहलायें।
- एच.एस. एवं बी.क्यू. टीका के 10-15 दिन पहले सभी पशु को कीड़ों की दवाइयाँ देना चाहिए ताकि टीका प्रभावी हो।
- पशुओं को 50 ग्राम खनिज मिश्रण एवं 20 ग्राम नमक प्रतिदिन देना चाहिए।
- अधिक दूध देने वाली पशुओं को तरल कैल्शियम फास्फोरस 70-100 ग्राम प्रतिदिन पिलायें।
- नवजात बच्चों को वाहय व आंतरिक परजीवियों जैसे जूं, चिचड़ी, किलनी इत्यादि से बचाव करें।

## मई माह में किसानों के लिए सलाह

- पशुओं को धूप व लू से बचाने का उपाय करें।
- गर्मी में पशुओं को छायेदार स्थान पर रखें एवं पीने के लिए स्वच्छ-ताजा पानी का प्रबंध अवश्य करें।
- पशुओं के आहार में मौसम के अनुसार आवश्यक बदलाव करें।
- पशुओं के आहार में गेहूँ का चौकर और जौ की मात्रा बढ़ाएं।
- दुग्ध उत्पादन क्षमता बनी रहे इसके लिए उसे संतुलित आहार दें।
- चिचड़ियों एवं पेट की कृमि से बचाव का उचित प्रबंध करें।
- खरीफ में हरा चारा लेने के लिए ज्वार और मक्का की बुआई करें।
- गलघोटू एवं लंगड़ा बुखार बीमारी से बचाव के टीके अवश्य लगवाएँ।
- दुधारू पशुओं को दो-तीन बार अवश्य नहलाएं।

## मार्च माह में किसानों के लिए सलाह

- बदलते मौसम में पशुओं की स्वास्थ्य का ध्यान रखें।
- वाहय परजीवियों (जूँ, चिचड़ी एवं किलनी इत्यादि) से बचाव के उपाय अपनाएं।
- खुरपका व मुहपका के टीकाकरण करवाएँ।
- पशुओं व बछड़ों-बछड़ियों को ठंडी व तेज हवाओं से बचाव करें।
- गर्भधारण किए हुए पशुओं को 1-1.5 किग्रा. दना अलग से खिलायें।
- ग्रीष्मकाल में हरे चारे हेतु मक्का, बाजरा एवं ज्वार की बुवाई करें।
- ब्याने वाले पशुओं की प्रसूति बुखार से बचाने के लिए खनिज मिश्रण अवश्य खिलायें।

## फरवरी माह में किसानों के लिए सलाह

- पशुओं को सर्दी से बचाव का प्रबन्ध करें।
- बाह्य परजीवी तथा अन्तः परजीवी की दवा पिलवाये।
- दूध पूरा व मुट्ठी बांधकर निकालें।
- पशुओं को संतुलित आहार के साथ-साथ 40-50 ग्राम खनिज मिश्रण प्रतिदिन खिलाये।
- दूध उत्पादन को अधिकतम बनाये रखने के लिए:-
  - (क) स्वादिष्ट एवं शीघ्र पचने वाले आहार दें।
  - (ख) स्वच्छ व ताजा पानी पिलाएँ।
- गर्मी में आने वाली पशुओं की कृत्रिम गर्भाधान कराएँ।
- पशुओं से संबन्धित आवश्यक जानकारी पशुशाला में अवश्य रखें।

## जनवरी माह में किसानों के लिए सलाह

- पशुओं को सर्दी से बचाएँ।
- छोटे बच्चों को सर्दियों में दस्त एवं परजीवियों से अवश्य बचाव करें।
- दुधारू पशुओं को उनके दुग्ध के अनुसार संतुलित आहार दें।
- पशुओं को मुँहपका-खुरपका बीमारी से बचाव के लिए टीका लगवायें।
- नवजात बच्चों, कमजोर एवं बीमार पशुओं को साफ ताजा गुनगुना पानी पिलायें।
- पशुओं को स्वस्थ रहने के लिए सफाई पर विशेष ध्यान दें।
- दुधारू पशुओं की समय-समय पर संक्रमण से बचाव के लिए जाँच करायें।
- दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिए दूध पूरा व मुट्ठी बाँध कर निकालें और दूध निकालने के 15-20 मिनट तक पशु को बैठने न दें।
- सर्द मौसम में थन फटने की समस्या को ध्यान में रखते हुए विशेष उपाय करें।
- रात के समय सभी पशुओं के लिए सूखा बिछावन अवश्य उपलब्ध पिलायें।

## किसानों के लिए उचित सलाह

1. पशुओं को सर्दी से बचाने का उचित प्रबंध करें।
2. पशुओं का बिछावन सूखा होना चाहिए एवं प्रतिदिन बदलते रहें।
3. चारे, जई व जौ फसलों की बुवाई करें।
4. दुधारू पशुओं को संतुलित खानपान दें।